7.7.2020

P. G. Ex. 1991. Paper - I GROUP - B (i) Ancient History

Q:- Throw light on the trade of Gupta age?

B.A Part I P. II B. गुप्तकालीन व्यापार पर प्रकाश डालें?

Ans. गुप्तकाल प्राचीन भारत का एक विशिष्ट काल था। गुप्तकाल में व्यापार का अधिक विकास हुआ कि नहीं, इस संबंध में इन दिनों इतिहासकारों में पर्याप्त मतभेद हो गया है गुप्तकाल को व्यापारिक दृष्टि से पतन की काल प्रो० राम शरण शर्मा एवं प्रो० डी० एन० झा मानते हैं। उनकी धारणा है कि गुप्त काल में विदेशी व्यापार में ह्रास हुआ था। सन 550 ई० तक भारत पूर्वी रोमन के साथ थोड़ा थोड़ा बहुत व्यापार करता रहा वह रेशम का निर्यात करता था। सन 550 ई० के आसपास पूर्वी रोमन साम्राज्य की साम्राज्य की जनता चीनियों से रेशम पैदा करने की कला सीख ली। इससे भारत के निर्यात व्यापार पर बुरा असर पड़ा। यही शताब्दी के मध्य के पहले ही विदेश में भारतीय रेशम के लिये मांग कमजोर पड़ गयी थी। पांचवी शदी के मध्य में रेशम बुनकरों की एक श्रेणी पश्चिम भारत स्थित अपने मूल निवास स्थान लाट देश को छोड़कर अन्य पेशे अपनाए।

परन्तु सूक्ष्म दृष्टि से विश्लेषण करने पर प्रो० शर्मा एवं प्रो० झा के गुप्त कालीन व्यापारिक ह्रास संबंधी सिद्धांत उचित प्रतीत नहीं होता है। मोती चन्द्र, डा० भगवत शरण उपाध्याय, डा० संतोष कुमार दास का प्राचीन भारतीय आर्थिक इतिहास में लिखित विवरण से ऐसा स्पष्ट होता है कि गुप्त काल आर्थिक दृष्टि से सम्पन्नता का काल था। व्यापार का ह्रास इस काल में निश्चित रूप से नहीं हुआ

P.T.O.

Scanned with CamScanner

नारद स्मृति के अनुसार गुप्त काल के व्यापारी साकेतिक के सिद्धांत पर व्यापार करते थे। कालीदास के विवरणों से विदेश व्यापार के उल्लेख मिलते हैं। कुमार संभव के अनुसार विदेशी व्यापार बढ़ा चढ़ा था।
कामसूत्र के विवरण से स्पष्ट है कि रेशम का व्यापार इस काल में भी था। मंदसोर के अभिलेख के उद्धरण का अर्थ भी प्रो० शर्मा ने गलत लगाया है। मंदसोर अभिलेख का यह अर्थ है कि रेशम बुनकरों की श्रेणी लाट देश को छोड़कर मंदसौर के दसपुर नामक नगर में आये। परन्तु शिल्पकार पहले व्यक्तिगत रूप से उस नगर में आये। उसके बाद बन्धु-बांधव एवं परिवार को बुलाकर बस गये यहाँ पर आकर ये उसके सदस्य अपनी कला में प्रवीण थे तथा रेशमी वस्त्र को बुनते थे।
- मंदसौर में सूर्य का भव्य सूर्य मंदिर का निर्माण करवाया था। आर्थिक सम्पन्नता रहने के कारण ही रेशम-बुनकरों इतने भव्य मंदिर का निर्माण करा सका। इस प्रकार हम देखते हैं कि गुप्त काल में व्यापार का ह्रास नहीं हुआ था।

गुप्त काल वस्तुतः व्यापारिक दृष्टि से समृद्ध का काल था। इस आर्थिक

P.T.O.

कारण

समृद्धि के कारण ही भारत का महत्व एशिया एवं मलेशिया में सांस्कृतिक सम्पर्क का माध्यम हो सका। इस संस्कृति के वाहक, सौदागर व्यापारी एवं ब्राह्मण पुरोहित थे। विभिन्न कठिनाइयों का सामना करते हुए वे लोग विदेशों में गए गुप्त काल के पूर्व ही मध्य एशिया के साथ भारत का औपनिवेशिक संबंध कायम था। परन्तु इस काल में भारत सांस्कृतिक एवं व्यापारिक संबंध में पूर्वी देशों के साथ अधिक वृद्धि हुई।

संस्कृत साहित्य में 'द्वीपान्तर' शब्द पूर्वी देशों के लिए व्यवहरित हुआ है। मारकण्डे पुराण में इन्द्र द्वीप कसेरुमान, ताम्रपर्ण, गभस्तीमान, नागद्वीप, सौम्य, गांधर्व एवं वरुण नामों द्वीप समूहों के उल्लेख मिलते हैं जो समुद्र से घिरे हुए थे। भारतीय व्यापारी इन द्वीपों में व्यवसाय करते थे।

गुप्त काल की राजनीतिक सफलता ने वाणिज्य एवं व्यवसाय के उत्कर्ष के मार्ग को प्रशस्त किया। उज्जैन और पाटलीपुत्र गुप्तकाल में व्यापार का केन्द्र था। पद्मप्राभृतकम यह उल्लेख करता है कि उज्जैन के बाजार घोड़े, हाथियों, रथ, बैलों एवं विभिन्न प्रकार के माल से भरे पड़े थे। अभ्यचित सारिका भी यह विवरण देता है कि पाटलीपुत्र की दुकानें विभिन्न वस्तु के मालों तथा उसके खरीददारों एवं विक्रेताओं से भरे पड़े थे। पदताडितकम के अनुसार उज्जैन के बाजार अन्तरवीथी नगर के नाम से जाने जाते थे। यह नगर के नाम से जाने जाते थे। यह नगर विदेशी

Scanned with CamScanner

यह नगर विदेशी मालों के ढेरों से भरा पड़ा था।

विकासित बैंकिंग प्रणाली ! → इस तरह की व्यवसायिक क्रिया कलापो ने बैंकिंग के विकास के मार्ग को गुप्त काल में उत्कर्ष कराया। नगर के जीवन में बैंको के प्रधान का सम्मान जनक स्थान था। मुद्राराक्षस के अनुसार बैंको का प्रधान अपने व्यवसाय को करने के साथ वदराजा को सलाह दिया करता था। कुमार गुप्त तथा बुद्ध गुप्त का अभिलेख यह विवरण देता है कि वैद्रावर्मण जो कोटी वर्षी विषय का राज्यपाल था वह नगर श्रेष्ठी सार्थवाह प्रथम कुलिक, प्रथम शिल्पी एवं प्रथम कायस्थ से मिली जुली एक समिति के साथ नगर में शासन करता था। बैंको का प्रधान सबसे बड़ा सौदागार होता था और वह नगर का प्रधान Banker तथा व्यापारिक सौदागरों के कारवां के नेता के रूप में मालों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाता था। [illegible] मृच्छकटिक यह विवरण देता है कि धनदत्त जो कारवां का नेता था उसका पुत्र समुद्र दत्त था। समुद्र दत्त अपने काल का कुबेर धन के मामले में था। इससे उस समय के साथ की आर्थिक सीमा का पता चलता है। सार्थवाह विदेशों में व्यापारिक माल लेकर जाते थे। प्रथम कुलिक प्रधान Banker का काम करता था। महत्वपूर्ण शुभ अवसर पर राजा का साथ प्रधान बैंकर सार्थवाह एवं व्यापारिक निगम के सदस्य देते थे।

व्यवसाय में निगम महत्वपूर्ण भूमिका गुप्त काल में।

में करते थे। बृहद सुग भाष्य के
अनुसार निगम के दो प्रकार थे एक वर्ग
के निगम के लोग बैंकिंग का काम करते
थे तथा दूसरे वर्ग के लोग दूसरे तरह के
व्यवसायिक कार्य करते थे।
बसाढ़ की मुहरों से स्पष्ट होता है कि
निगम श्रेणी, सार्थवाह एवं कुलिक
के बीच अत्यंत घनिष्ठ संबंध रहता था
इसका कारण यह था कि सभी
व्यवसायिक कार्यों में भाग लेते थे।
गुप्त काल में व्यवसायिक निगमों की
उपस्थिति थी। इस संबंध में अनेक
विवरण मिलते हैं। कुमार गुप्त के
मंदसौर अभिलेख से लाट देश के
रेशम बुनकरों की एक का विवरण
मिलता है तथा उसके सदस्य उस
निगम पर गर्व का अनुभव करते थे।
स्कंद गुप्त के काल का एक अभिलेख
तेल बेचने वाले एक निगम की
उपस्थिति में विवरण देता है।
592 (पांच सौ बेरानबे)
ई० का विष्णु सेन का अभिलेख
पश्चिमी भारत में व्यापारियों एवं राजा
के बीच अच्छे संबंध पर प्रकाश
डालता है। उसके राज्य में में रहने
वाले सौदागरों ने राजा से यह अनुरोध
किया था कि उनके अधिकारों की
रक्षा के लिए राजा एक घोषणा
निकाले। उस समय के विधि विधान
समकालीन व्यापारिक क्रिया कलापों
के संबंध में विवरण देते हैं अगर
सौदागर का पुत्र जीवित होता तो राजा
बलपूर्वक उसकी जायदाद को नहीं
छीन सकता था। व्यापारियों के विरोध
में मुकदमे नहीं किए जा सकते थे।
सदर में व्यापारियों को गिरफ्तार
नहीं

Scanned with CamScanner

किया जा सकता था। अगर एक व्यापारी अपने आप हत्या कर ता तो उसकी पत्नी को गिरफ्तार नहीं किया जा सकता था। अपने मालों को बेचने में लीन एक सौदागर को गवाही देने के लिए मुकदमें में नहीं बुलाया जा सकता था। सभी व्यापारिक निगम व्यापार में अपने व्यवसाय एक ही बाजार में नहीं करते थे। इसका मतलब यह था कि विभिन्न पेशा एवं व्यवसाय में लगे विभिन्न व्यापारी नगर के विभिन्न आवासों में रहते थे तथा वे एक ही आवास में नहीं रह सकते थे। संभवतः व्यापारिक निगम के सदस्य बाजार कर नहीं चुकाते थे संभवतः उस कर को राजा के यहाँ जमा किया जाता था। कानून की दृष्टि से विदेशी सौदागरों को वे सभी अधिकार नहीं मिले हुए थे जो देशी सौदागरों को मिले थे। आषाढ़ और पौष मास में आगार को सरकारी अधिकारी अच्छी तरह से निरीक्षण करते थे। अतः के व्यापारियों से कर वसूला जाता जो जाते थे तो उन्हें कर से मुक्त कर दिया दिया जाता था लेकिन अगर विदेशी भी वे बराबर जाते थे तो उन्हें बाहर जाने का कर देना पड़ता था। नावों पर लदे मालों का भाड़ा 12 रुपये एक रुपया धार्मिक कर तथा एक चवन्नी लिया जाता था। शराब से भरी एक नाव का कर 12 रुपये था तथा उस पर धार्मिक कर एक रुपया चार आना था। इसके ही तरह से भी उसके मालों का आधा भाग कर के रूप में लिया जाता था।

उपरोलिखित व्यापारिक नियमों से भारतीय वाणिज्य एवं व्यवसाय के विभिन्न की जानकारी मिलती है। जम्बू द्वीप प्रज्ञापति तथा महावस्तु के विवरणों से गुप्त कालीन विभिन्न निगमों की जानकारी मिलती है। जम्बू द्वीप 18 प्रकार के निगमों जैसे वर्तन बनाने वाले, रेशम बुनकर सुनार रसोइया गायक नाम मालाकार, सब्जी बेचने वाले, पान बेचने वाले, c-obb+es तेलियो गंधिक रंग रेज, Brazz ess इंडिया ग्वालो, शिकारियो मल्लाहो का उल्लेख करते है

पंचतंत्र के विवरणों से वाणिज्य एवं व्यवसाय के महत्व स्पष्ट होते है। पंचतंत्र में यह कहा गया है कि वाणिज्य और व्यवसाय से अधिक आर्थिक सम्पन्नता में बड़ी वृद्धि होती है। सुगन्धि बेचने के पेशे वाले को अपने व्यवसाय में अधिक फायदा था। बेईमान व्यापारी इस काल में ऊंचे सेर बदस्तर से माल देने में आनंद का अनुभव करते थे

विदेश व्यापार :→

गुप्त काल में विदेश व्यापार से अधिक लाभ होता था। सड़क की सुरक्षा व्यापार के लिए आवश्यक थी इसके लिए गुप्त काल में एक पदाधिकारी की नियुक्ति की गयी थी ऐसा प्रतीत होता है कि व्यापारियों को सुख सुविधा तथा मार्ग में सुविधा के लिए पदाधिकारी की नियुक्ति होती थी।

यशोवर्मन का नालंदा अभिलेख शिशिम नामक प्रधान मार्ग का उल्लेख करता है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह मार्ग पद्मधिकारी का था। गुप्त काल में मार्गों पर सेना की देख रेख का काम करती थी शान्ति के समय में नगाड़े भी बजाए जाते थे।

भारत और चीन का संबंध गुप्त काल में अधिक मजबूत हुआ। बौद्ध धर्म के कारण यह संबंध और अधिक मजबूत हुआ। गुप्त काल में मध्य एशिया से काबुल होते हुए भारत का व्यापारिक मार्ग था। बैक्ट्रिया मार्ग बलख होकर गुजरती थी। गुप्त काल में अधिक संख्या में भारतीय मलेशिया एवं इण्डो चीन में जाने लगे। ईसा की प्रथम सदी में अनेक की स्थापना भारतीयों ने की थी फाहियान के पांचवी सदी के विवरण से यह स्पष्ट होता है कि जावा में लोग बस गए और हिन्दू धर्म का यहां केन्द्र था। बाद में बौद्ध धर्म का भी प्रचार यहीं हुआ। चीनी यात्रियों के विवरणों से हमें यह जानकारी मिलती है कि भारतीय जहाज चीन में बराबर जाते थे तथा इस मार्ग से भारतीय सौदागर एवं बौद्ध साधु आते जाते थे। बौद्ध साहित्यों के विवरण से यह स्पष्ट है कि भरत कच्छ - सोपारा एवं कल्याण भाग की पश्चिमी समुद्र

तह के तथा ताम्र लिपी पृथ्वी समुद्र पर के बन्दरगाह थे तथा ये सभी प्रसिद्ध गुप्त काल के थे किश्चा, दोनों काफी से स्पष्ट है कि भी ता। समुद्री व्यापार का मुख्य केन्द्र था जहां पर ईरान एवं अबीसीनिया से जहाज आते थे तथा विदेशों में जाते थे। अमोहन्ड से भारतीय बन्दरगाहों पर माल आते थे इस तथ्य की जानकारी हमें इथाल गुरु देव पद्धति के विवरण से होती है। समुद्री मार्ग गुप्त काल में खतरे से खाली नहीं था। फाह्यान के विवरणों से इस तथ्य की पुष्टि होती है। समुद्री मार्ग को पार करने से समुद्री बेड़ को 15-16 दिन तथा कभी-कभी महीनों भी लग जाते थे। मानसून हवा से भी खतरा की संभावना थी।

गुप्त काल के अनेक तरह के जहाज विदेशों में व्यापार करने के उद्देश्य से जाते थे। गुप्त कालीन साम्राज्य वादी शासकों के शासन काल में भारत का व्यापार जावा, पेगू, कम्बोडिया, श्याम-चीन तथा जापान के साथ अधिक बढ़ गया।

Scanned with CamScanner

तथा यूरोप के साथ होता था।
थूमि मार्गों से persia के साथ भी व्यापार होता था। कालिदास के रघुवंश के विवरण से भी P के साथ भारत के व्यापार का ओर मिलता है। वर्णित है जिसने समुद्री मार्ग से व्यापार कर सम्पत्ति की थी। आश्वलायन संहिता में उल्लेख है कि हिन्दू लोग आर्थिक लाभ प्राप्त करने के लिए समुद्र से यात्रा करते थे। पुराण में एक संतान हीन गोकर्ण नामक सौदागर का उल्लेख मिलता है जिसने व्यापार के उद्देश्य से समुद्र यात्रा की थी तथा वहाँ से अधिक सम्पत्ति लाई।
गुप्त काल से ही भारत का रोम के साथ व्यापार धीरे-धीरे घट गया। चीन के साथ भारत के व्यापार को के हाथों अधिक धक्का लगा।

निष्कर्षतः हम देखते हैं गुप्तकाल में भारत का व्यापार - चीन - पीछका - जावा सुमात्रा - बाली - बोर्नियो के साथ अधिक बढ़ा था, भारतीयों ने गुप्तकाल में उपनि की स्थापना व्यापारियों तथा धर्म प्रचारकों के माध्यम से की, आर्थिक सम्पन्नता एवं व्यापारिक अभूतपूर्व प्रगति के काल में ही अ उपनिवेशों की स्थापना होती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि गुप्त काल व्यापारिक प्रगति का काल था।

Yuvraj